डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

विषय- संस्कृत, एम० ए०
प्रथम सेमेस्टर, व्याकरण

Date Page 28/4/20

वर्णोपदेश का प्रयोजन :-

महाभाष्यकार पतञ्जलि वर्णोपदेश के विषय में प्रश्न उपस्थापित करते हुए कहते हैं- 'किमर्थो वर्णानामुपदेशः' क्योंकि व्याकरण का उद्देश्य वर्णों के साधुत्व का प्रतिपादन करना है। परन्तु वर्णोपदेश से किसी भी शब्द का साधुत्व प्रतिपादित नहीं होता। इसलिए 'अइउण्' आदि चौदह सूत्रों उपदेश किसलिए किया गया, यह प्रश्न उपस्थित किया गया है। भाष्यकार ने वर्णोपदेश के तीन प्रयोजन उपस्थापित किये हैं- (1) वृत्तिसमवायार्थ उपदेशः (2) अनुबन्ध-करणार्थः (3) इष्टबुद्धयर्थः। इनमें से प्रथम प्रयोजन (1) वृत्तिसमवायार्थ उपदेशः' का अर्थ है- 'वृत्तये समवायो वृत्तिसमवायः' वृत्त्यर्थो वा समवायो वृत्तिसमवायः। वृत्तिप्रयोजनो वा समवायो वृत्तिसमवायः। अर्थात् वृत्ति समवाय के लिए वर्णों का उपदेश किया जाता है। वृत्तिसमवाय का अर्थ है- वृत्ति के लिए समवाय, अथवा जिसका फल वृत्ति है वह समवाय अथवा जिसका प्रयोजन वृत्ति है वह समवाय। 'वृत्तये समवायः' से तात्पर्य है कि 'लाघवेन शास्त्रवृत्तये' अर्थात् लाघव से शास्त्र में रुचि प्रवृत्ति हो सके, यही वर्ण समाम्नाय का प्रयोजन है। वर्ण समाम्नाय करने पर अच् आदि संज्ञाओं की प्राप्ति हो सकेगी। ततश्च लाघवेन शब्दानुशासनम्। द्वितीय विग्रह 'वृत्त्यर्थो वा समवायः' का अभिप्राय है कि इ, उ, ऋ,

Scanned with CamScanner

के स्थान पर य, व, र, ल हों ऐसा विवृत वर्णों के स्थान पर लघु रूप में 'इको यणचि' कहने मात्र से शास्त्रप्रवृत्ति हो सकती है। तृतीय विग्रह- वाक्य 'वृत्ति प्रयोजनो वा समवायः' का तात्पर्य है- कि 'ण' आदि की इत् संज्ञा करके प्रत्याहारों की सिद्धि की जाती है। अतः यह भी लाघव से शास्त्रप्रवृत्ति के लिए उपयोगी है। संक्षेप में 'वृत्ति समवायार्थ उपदेशः' वार्तिक का तात्पर्य है कि शास्त्र की प्रवृत्ति के लिए वर्णों का एक क्रम से उच्चारण किया जाता है। यह वर्णोपदेश का प्रथम प्रयोजन है।

(2) वर्णोपदेश का द्वितीय प्रयोजन है- 'अनुबन्धकरणार्थश्च'। अर्थात् अनुबन्ध लगाने के लिए वर्णों का उपदेश करना चाहिए क्योंकि का निश्चय है कि मैं अनुबन्ध लगाऊँगा। परन्तु बिना वर्णों का उपदेश किये अनुबन्धों का लगाना सम्भव नहीं, क्योंकि अनुबन्धों के लगाने में वर्णों का पहले उच्चारण किया जाना नितान्त आवश्यक है। अ इ उ के उपदेश किये जाने पर ही उसके आगे 'ण्' रूप चिह्न लगाना सम्भव रहता अन्यथा असम्भव ही था। इसलिए जो यह वर्णों का उपदेश है, सो एक तो शास्त्र की प्रवृत्ति के लिए किसी विशेष क्रम से वर्णों के ज्ञानार्थ है, द्वितीय अनुबन्धों के लगाने के लिए है। शास्त्र की प्रवृत्ति के लिए

Scanned with CamScanner

जो समवाय और अनुबन्धों का लगाना है सो दोनों बातें प्रत्याहार के लिए उपयोगी होती है। प्रत्याहार वृत्ति शास्त्रों की प्रवृत्ति के लिए है - 'अनुबन्धकरणार्थश्च वर्णानामुपदेशः - अनुबन्धाना सङ्ख्यामिति। न ह्यनुपदिश्य वर्णानुबन्धाः शक्या आसङ्क्तुम्। स एष वर्णानामुपदेशो वृत्तिसमवायार्थश्चानुबन्धकरणार्थश्च। वृत्तिसमवायश्चानुबन्धकरणं च प्रत्याहारार्थम्। प्रत्याहारो वृत्यर्थः'।

(3) 'इष्टबुद्ध्यर्थश्च वर्णानामुपदेशः' - 'इष्टान् वर्णान् बोत्स्यामहे' इति। न ह्यनुपदिश्य वर्णानिष्टा वर्णाः शक्या विज्ञातुम्।

वैयाकरणों को जैसा वर्णोच्चारण अभिलषित है वैसे ही उच्चारण वाले वर्णों के बोधन के लिए भी वर्णों का उपदेश किया जाता है। आचार्य का निश्चय है कि हम इष्ट वर्णों का ज्ञान सभी जिज्ञासुओं को करा देंगे। और बिना वर्णों के उपदेश के इष्ट वर्णों का ज्ञान सम्भव नहीं है। अतः इष्ट बोधन के लिए वर्णों का उपदेश किया गया है। इस पर आक्षेप करते हुए कहते हैं कि 'इष्टबुद्ध्यर्थश्चेति चेदुदात्तानुदात्तस्वरितानुनासिकदीर्घप्लुतानामप्युपदेशः'। पूर्वपक्षी का कहना है कि वर्णोपदेश में केवल ह्रस्व अचों का ही उपदेश किया गया है। परन्तु इष्ट वर्णों के साथ उदात्त, अनुदात्त, स्वरित, अनुनासिक, दीर्घ एवं प्लुत वर्णों का भी उपदेश करना चाहिए, क्योंकि इन

Scanned with CamScanner

गुणों वाले वर्ण भी सबके लिए अभिप्रेत होंगे। सूत्रपाठ में भी निरनुनासिक एवं ह्रस्व का पाठ होने से अनुनासिक, दीर्घ और प्लुतों का संग्रह किया गया है।

महर्षि पतञ्जलि ने इसके समाधानार्थ वार्तिक को प्रस्तुत किया है - 'आकृत्युपदेशात् सिद्धम्' अर्थात् 'अ' वर्ण के द्वारा सभी 18 प्रकार के 'अ' वर्णों का ग्रहण = उपदेश हो जायेगा। इसीप्रकार 'इ' वर्ण की आकृति से सभी प्रकार के 'इ' तथा उत्व जाति के उपदेश से सभी प्रकार के 'उ' वर्णों का उपदेश हो जायेगा।

Scanned with CamScanner